Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 5 ~ Issue 4 (2017)pp: 79-81
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

स्वातंत्रयोत्तर भारतीय दर्शन (1952)–एक दृष्टिकोण

डॉ. भूपेन्द्र कौर
सहायक प्राध्यापिका
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सार–
वास्तविक तथा जिज्ञासा–भाव से निकाला हुआ संशयवाद विश्रवास को उसकी स्वाभाविक नीवों पर जमाने में सहायक होता है। नीवों को अधिक गहराई में डालने की आवश्यकता का ही परिणाम महान् दार्शनिक हलचल के रूप में प्रकट हुआ, जिसने छः दर्शनो को जन्म दिया जिनमे काव्य तथा धर्म का स्थान विश्रलेषण और शुष्क समीक्षा ने लिया रूढिवादी सम्प्रदाय अपने विचारों को जन्म संहिताबद्ध करने तथा उसकी रक्षा के लिए तार्किक प्रमाणों का आश्रय लेने को बाध्य हो गए। दर्शनशास्त्र का समीक्षात्मक पक्ष उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है कि जितना कि अभी तक प्रकल्पनात्मक पक्ष था। दर्शनकाल से पूर्व के दार्शनिक मतों द्वारा अखण्ड विश्व के सम्बन्ध में कुछ सामान्य विचार तो अवश्य प्राप्त हुए थे, किन्तु यह अनुभव नही हो पाया था कि किसी सफल कल्पना का आधार ज्ञान का एक समीक्षात्मक सिद्वान्त ही होना चाहिए। समालोचकों ने विरोधियों को इस बात के लिए विवश कर दिया कि वे अपनी प्रकल्पनाओं की प्रामाणिकता किसी दिव्य ज्ञान के सहारे सिद्ध न करें, बल्कि ऐसी स्वाभाविक पद्धतियों द्वारा सिद्ध करें जो जीवन और अनुभव पर आधारित हों कुछ ऐसे विश्रवासों के लिए, जिनकी हम रक्षा करना चाहते है, हमारा मापदण्ड शिथिल नही होना चाहिए।

मुख्य शब्द (Key words): *प्रकल्पनात्मक, संशयवाद, कालातीत*

प्रस्तावना–

इसका आरम्भ 1952 मे होता है जिस वर्ष प्रथम भारतीय चुनाव हुआ। इलाहबाद मे 1954 ई. मे आधुनिक भारतीय दर्शन परिषद की स्थापना इस युग की एक प्रमुख धटना है, जिसने हिन्दी मे दर्शन की प्रथम त्रैमासिक पत्रिका 'दार्शनिक' का प्रकाशन आरम्भ किया है। दूसरी धटना डा. राधाकृष्णन् का दार्शनिक जगत से हटना है। इस युग मे डॉ. राधाकृष्णन् युग की अधिकाशं प्रवृत्तियों का ह्रास हो गया है। उदाहरण के लिए डॉ. राधाकृष्णन् युग के दार्शनिक, शास्त्रज्ञ, विद्वान थे। किन्तु इस युग के दार्शनिक, शास्त्रा और विद्वान होने का दावा नही करते है। फिर राधाकृष्णन् युग के अधिकाशं दार्शनिक प्रत्ययवादी तथा अध्यात्मवादी थे और स्वातंत्रयोत्तर युग के दार्शनिक प्राय; प्रत्ययवाद का तो स्पष्ट निराकरण करते है। इनमे से कुछ अध्यात्मवाद का भी स्पष्ट खंडन करते है तथा कुछ अध्यात्मवाद की चर्चा से ही दूर है। स्वदेशी चिन्तन का अभाव तथा समकालीन पाश्चात्य दर्शन का घनघोर प्रभाव इस युग की प्रमुख विशेषता है। यथार्थवाद और भाषा–विश्लेषण ने प्रत्येक दार्शनिक को विमुग्ध कर लिया है जो लोग प्रत्ययवाद और अध्यात्मवाद की चर्चा करने का प्रयास करते है वे भी भाषा–विश्लेषण के आलोक मे मूल्यवाद को प्रस्तुत करते है। इस युग के प्रमुख दार्शनिको मे प्रो. एन.बी. बनर्जी, डॉ. कालिदास भटटाचार्य, डॉ. दयाकृष्ण, डॉ. आनंद गणेश जावडेकर, देवी प्रसाद चटटोपाध्याय, डॉ. गणेश्वर मिश्र आदि प्रमुख ळें

स्वातंत्रयोत्तर भारत दर्शन की मुख्य प्रवृत्तियॉ–

राधाकृष्णन् युग का दार्शनिक शब्द प्रमाण को महत्व न देते हुए भी प्रस्थानत्रयी या किसी अन्य दार्शनिक ग्रंथ का भाष्यकार था। स्वतंत्रयोत्तर दार्शनिक भाष्यकार नही है। वह शब्द प्रमाण को महत्व नही देता है। किन्तु वह भाषा विश्लेषण और शब्द को महत्व देता है और लौकिक भाष–प्रयोग के विश्लेषण की विधि से या तर्क–शक्ति से अनुभव का विश्लेषण करता है।

स्वातंत्रयोत्तर युग की चार प्रवृत्तियॉ मुख्य है– मूल्यवाद, भाषा–विश्लेषण, अनुभववाद और साम्यवादी भौतिकवाद। जिनका वर्णन आगे विस्तार से किया गया है।

(क) मूल्यवाद–

हमारे विचार से स्वांतत्रयोत्तर युग की सबसे प्रबल दार्शनिक धारा मूल्यवाद है। जैसे पश्चिम मे तार्किक प्रत्ययवाद का विकास मूल्यात्मक प्रत्ययवाद मे हुआ, वैसे भारतीय प्रत्ययवाद का भी विकास परमार्थवाद या परम मूल्यवाद मे हुआ है। परम मूल्यवाद ने एक और भावाद्वैत, आत्माद्वैत, विशिष्टाद्वैत, भेदाभेद आदि के संधर्षो को शांत कर दिया है, क्योकि वे सभी एक परमार्थ मे विश्वास करते हैं और दूसरी ओर इसने परमार्थ मे प्रकारता मे भेद मान कर यथार्थवाद–प्रत्ययवाद, भौतिकवाद–अध्यात्मवाद आदि के विवाद को भी समाप्त कर दिया है। जिन लोगो ने मानववाद को अग्रसर किया है वे भी मूल्यवादी ही है, क्योकि वे मानवीय मूल्यो की उपलब्धि के लिए प्रयत्नशील है। भाषा–विश्लेषण और अनुभववाद भी सुंदरम् और शिवम् जैसे मूल्यो को स्वीकार करते है और उनकी एक ऐसी व्याख्या देने का प्रयत्न करते है जिससे उनका संबंध हो जाये। इसी प्रकार जनता–जनार्दन और दरिद्रनारायण की सेवा एक नया मूल्य है। विभिन्न धर्मो की एकता का जो प्रचार करते हैं वे एक प्रकार से इसी आध्यात्मिक मूल्य को विकसित करते है। इसी प्रकार समाजवाद और साम्यवाद के द्वारा भी लोग केवल मानव–मूल्यों की प्रतिष्ठा मे संलगन है। अत; हम मानवतावाद को एक मूल्य सिद्वांत मान सकते है। फिर भी जो लोग इस सिद्वान्त का विशेष प्रचार–प्रसार कर रहे हैं, उनमे डॉ0 दयाकृष्ण, डॉ0 नंदकिशोर देवराज, अनंतगणेश जावडेकर आदि उल्लेखनीय है। राम मनोहर लोहिया (1910–1967) का समाजवाद और दीनदयाल उपाध्याय का एकान्त मानववाद मूल्यवाद के ही अंतर्गत हैं। किन्तु लोहिया का समाजवाद एक सर्वथा नवान विचार–दर्शन है। वह एक संपूर्ण समाज–दर्शन हैं उनका विचार–दर्शन एक नयी क्रान्ति का दर्शन है, वे भारतीय समाज के संस्थापक और सूत्रकार है उन्होने महात्मा गॉधी के विचार–दर्शन मे अहिसात्मक विधियो का प्रयोग करके एक नया विकास किया है। उनके दर्शन का विकास विशेषत; 1952 ई0 से लेकर 1958 ई0 तक हुआा अत; स्वातंत्रयोत्तर दर्शन मे सबसे प्रथम स्थान उन्ही के दर्शन का है। उन्होने एक समग्र दृष्टि दी है, जिससे नवमूल्यांकन किया जा सकता है, प्राचीन और कालातीत मूल्यो और उनकी मूर्तियो की स्थापना की जा सकती है। उनकी सबसे बडी देन यह है कि उन्होने मार्क्सवाद से आगे जाने वाला एक समाजवादी दर्शन दिया है और मार्क्सवाद की समाजवादी आलोचना की है तथा उन नवयुवको को एक विचार दर्शन दिया है जो इंग्लैंड, अमरीका की वर्तमान दार्शनिक पद्वतियों से स्वतंत्र और अधिक प्रगतिशील एक विचार–पद्धति को विकसित करना चाहते

है। वे सक्रिय राजनीति मे भी आगे बढे थे और भारतीय राजनीति प्रतिपक्ष को वाणी, मन और कर्म से सबल करने मे लगे थे। इस कारण भारत सरकार ने इनके विचार दर्शन का विरोध किया और दार्शनिक जगत मे उनको अपने जीवनकाल मे मान्यता मिल पाया।

पाश्चात्य मूल्यवाद से समकालीन भारतीय मूल्यवाद की एक विशेषता यह है कि यह सुंदरम् से अधिक शिवम् को महत्व देता है, जब कि पाश्चात्य मूल्यवाद सुदरम् को शिवम् से अधिक महत्व देता है। प्राचीन भारतीय परमार्थवाद भागवतम् या पावनत्व को शिवम् से भी अधिक महत्व देता था किन्तु समकालीन भारतीय मूल्यवाद शिवम् को सर्वोत्तम मूल्य मानता है और जो कुछ अन्य मूल्यवान हो सकता है, उसको वह शिवम् से निम्नतर रखता है। जहॉ प्राचीन भारतीय परमार्थवाद मूल्य और मूल्य–लाभ को व्यक्तिगत मानता था वहॉ समकालीन भारतीय मूल्यवाद मूल्य और मूल्य–लाभ दोनो को समालगत मानता है। मूल्यो का स्वरूप सामाजिक है और उनका स्थिरीकरण भी समाज के रूपो मे ही होता है। सामाजिक मूल्यों का प्रमुख आयाम है। नवमूल्यांकन और नवमूल्य–परिवर्तन समकालीन भारतीय जीवन की सबसे बडी घटना है। पुराने मूल्य टूट रहे है और नये मूल्य प्रतिष्ठित हो रहे है। धीरे–धीरे प्राचीन जीवन–पद्धति दोनो समाप्त हो रहे है तथा एक नवीन जीवन पद्धति निकल रही है। यह सब संक्रमण कालीन संकट के कारण सर्वसाधारण को स्पष्ट नही हो रहा है। किन्तु जिनमे दूर दष्टि और मूल्यबोध है वे समझ रहे है कि समकालीन भारतीय जन–मानस और जन–जीवन मूल्य मंथन कर रहा है और इस मंथन मं मानवीय मूल्यो की प्रतिष्ठा उत्तरोत्तर बढती जी रही है। संस्कृति दर्शन और धर्म दर्शन के नाम से उन प्राचीन मूल्यो का संरक्षण हो रहा है जो आज भी उपयोगी है। राजनीति सुधार, संस्था सुधार, कानून परिवर्तन आदि से नये उपयोगी मूल्यो की अवतारणा हो रही है। कला और विद्या का समाजपयोगी पक्ष विकसित हो रहा है। स्वतंत्रता का लाभ अधिक लोगो को मिल रहा है।

किन्तु भारतीय मूल्यवाद अभी बचपन मे ही है। नये मूल्यों की पर्याप्त खोज हो जाने के उपरान्त ही मूल्यवाद का शास्त्रीय रूप उभरेगा। किन्तु नव मूल्यबोध बहुतो को उपलब्ध हो चुका है, यह कम महत्व की बात नही है। आखिरकार दर्शन के अध्ययन का फल एक मूल्यबोध प्राप्त करना ही तो है।

(ख) भाषा–विश्लेषण–

समकालीन पाश्चात्य भाषा–विश्लेषण का भारत मे प्रचार करने वालो मे धीरेन्द्र मोहन दत्त,कालिदास भट्टाचार्य, दयाकृष्ण, के.जे. शाह, यशदेवशल्य आदि प्रमुख है। प्राचीन भारतीय भाषा–विश्लेषण और भाषा–दर्शन का प्रचार करने वालो मे गौरीनाथ शास्त्री, के.ए. सुब्रह्मण्यम, अय्यर, के. कुंजनी, राजा लक्ष्मण स्वरूप, रामचंद्र पांडेय, विष्णु प्रसाद भट्टचार्य प्रमुख है। इन दोनो प्रकारो से स्वतंत्र कोई नया भारतीय भाषा विश्लेषण भारत मे पैदा हो रहा है, इसकी जानकारी इन लेखको को नही है। संभव है इन दोनो प्रकारो के विद्वानो ने अपने–अपने क्षेत्र के परिष्कार मे कही–कही मौलिकता प्रदर्शित की हो। इस मौलिकता को लेकर आगे चलकर समकालीन भारतीय भाष–विश्लेषण का संप्रदाय खडा हो सकता है। किन्तु अभी इसकी संभावना दूरवर्ती है, यह यथार्थ नही है। भाषा–विश्लेषण के क्षेत्र मे एक ओर प्राचीन भारतीय व्याकरण दर्शन का परिष्कार हो रहा है और दूसरी ओर आधुनिक पाश्चात्य भाषा–विश्लेषण का अनुकरण।

(ग) अनुभववाद–

राधाकृष्णन् युग के जी.सी. चटर्जी, रासबिहारीदास और मानवेन्द्रनाथ राय ने अपने को क्रमश; अनुभववादी, यथार्थवादी और भौतिकवादी घोषित किया था। इसके अतिरिक्त डॉ0 यदुनाथ सिन्हा और नागराज शर्मा ने भारतीय प्रत्ययवाद के विरोध मे भारतीय यथार्थवाद का परिष्कार किया था। ये सब यथार्थवादी दृष्टिकोण प्रचलित भारतीय प्रत्ययवाद और अद्वैतवाद के विरोध मे थे एक ओर अग्रेज दार्शनिक बर्ट्रेंड रसेल, हवाइटहेड, जी.इ. मूर. और सैम्युअल एलेक्जेंडर के प्रभाव के कारण थे तो दूसरी ओर द्वैतवेदंत, जैनमत और न्यायवैशेषिक के प्रभाव सेइनकी विचारधारा को हम स्वातंत्र्योत्तर भारतीय यथार्थवाद कह सकते है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय यथार्थवाद तार्किक प्रत्यक्षवाद से अधिक प्रभावित है। प्रो0 निकुंजबिहारी बनर्जी और के. सच्चिदानंद मूर्ति जैसे अनुभववादी है जो तार्किक प्रत्यक्षवाद से प्रभावित है। के. सच्चिदानंद मूर्ति यथार्थवाद और अनुभववाद से प्रभावित अवश्य है, किन्तु वे वस्तुत; मूल्यवादी दार्शनिक है और मूल्यो मे उनका जितना विश्वास है, उतना वस्तुओ के सदभाव मे नही है। तत्तवमीमांसा के क्षेत्र मे केवल प्रो0 निकुंजबिहारी बनर्जी ही विशु, यथार्थवादी है। यद्यपि ये अवस्था मे रासबिहारी दास के समवयस्क है फिर भी उनके दर्शन का स्पस्टीकरण स्वातंत्र्योत्तर युग मे हुआ। यशदेवशल्य के सम्पादन मे अनुभववाद नामक एक पुस्तक 1960 मे प्रकाशित हुई थी जिसमे यशदेवशल्य के अतिरिक्त दयाकृष्ण, राजेन्द्रप्रसाद, श्री चंद, नारायण मूर्ति याकूब मसीह और सुरेशचंद्र के निबंध संकलित है। ये सभी निबंध समकालीन पाश्चात्य तार्किक प्रत्यक्षवाद पर है। इनके कोई भारतीय दृष्टिकोण नही है और न ही इन लेखको ने आगे चल कर अपने आप को तार्किक प्रत्यक्षवादी ही घोषित किया है।

(घ) साम्यवादी भौतिकवाद–

साम्यवादी भौतिकवाद के मानने वालो मे बौद्ध विद्वान् आ0 नरेन्द्रदेव, राहुल सांकृत्यायन और धर्मानंद कौशाम्बी को सबसे पहले गिना जाता है। किंतु वे यथार्थत; भौतिकवादी नही थे। वे बौद्ध सर्वास्तिवाद मे प्रतिपन्न थे और साम्यवादी भौतिकवाद को उसी दिशा मे एक विकसित मत मानते थे। साम्यवादी दृष्टिकोण से बौद्धमत नामक ग्रंथ मे राहुल सांकृत्यायन, रामविलास शर्मा, देवी प्रसाद चटटोपाध्याय, वाई.बलराम मूर्ति और मुल्कराज आनंद के विभिन्न निबंध संग्रहीत है। किंतु बौद्धधर्म से सर्वथ अप्रभावित भौतिकवादियों मे मानवेंद्रनाथ राय अग्रगण्य हैं यद्यपि वे आरंभ मे मार्क्सवादी भौतिकवाद से प्रभावित थे तथापि उन्होने एक ऐसे बुद्विवाद और मानववाद का विशेष प्रचार किया जो अंत मे साम्यवाद का विरोधी हो गया है। उन्होने भारतीय प्रत्ययवादी और आध्यात्मवादी विचारधारा का खंडन करके अपने मानववाद की स्थापना की है।

प्रो0 डी. डी. कौशाम्बी और एस.ए. दागे ने समस्त भारतीय इतिहास की ही व्याख्या मार्क्सवादी सिद्धांत ऐतिहासिक भौतिकवाद के द्वारा करने का प्रयास किया है। उनके पश्चात् देवी प्रसाद चटटोपाध्याय ने बताया है कि समस्त भारतीय दर्शनो का मूल स्वर भौतिकवाद है। इस प्रकार वर्तमान काल की राजनीतिक शक्ति का सहारा लेकर साम्यवादी विचारक कहने लगे है कि भारतीय दर्शन वास्तव मे पश्चिमी दर्शन को कोई नया पाठ नही पढाता है। उनका तात्पर्य यह है कि समकालीन भारत को अपने प्राचीन दर्शन का मूल मंतव्य है। कहना नही होगा कि यह विचारधारा निराधर है और कुछ चार्वाकमत, तंत्र आदि भारतीय दर्शनो को अधिक महत्व देने के कारण बनी है। अधिक से अधिक यह भारतीय दर्शन का एक पक्ष हो सकती है और इसे समस्त भारतीय दर्शनो के स्थान पर प्रतिष्ठित नही किया जा सकता है। यह समस्त भारतीय दर्शनो का समन्वय नही है।

निष्कर्ष–

आधुनिक भारतीय भाषा के माध्यम से सर्वथा नव चिंतन करना राजा राममोहन राय की मुख्य समस्या थी जो उस समय टाल दी गयी थी। आज इस समस्या को टाला नही जा सकता है। आज प्राचीन पाश्चात्य दर्शन, अमेरिका इग्लैंड का प्रभाव, रूसी साम्यवाद का प्रभाव आदि भारतीय चिंतन पर प्रभावकारी है। किन्तु इन प्रभावो से स्वतंत्र एक दार्शनिक मत का निर्माण करना ही असली समस्या है। स्वातंत्रयोत्तर युग का दार्शनिक इसके प्रति जागरूक है, यही बहुत बडी उपलब्धि है। इस जागृति का प्रतिफल अवश्य ही यथाकाल होगा। अभी तक भारतीय दर्शन की मान्यता और प्रतिष्ठा का दाता इग्लैन्ड और अमेरिका राष्ट् थे। किन्तु अब रूस भी भारतीय दर्शन का मान्यता और प्रतिष्ठा का दाता हो रहा है। किन्तु इन तीनो की सामाजिक और राजनीतिक पद्धतियो मे अंतर हैं। इस कारण भारत मे दार्शनिक इस समय प्राय; दो प्रकार के है। इससे दार्शनिको के दो विरोधी दल पनप रहे है। यह दार्शनिक प्रतिबद्धता स्वातंत्रयोत्तर दर्शन मे बडा प्रभाव डाल रही है। इन दोनो दलो के विरोध मे

*Corresponding Author: डॉ. भूपेन्द्र कौर

तटस्थता, दल–निरपेक्षता और स्वदेशी प्रगति का आहवान किया गया है। कहा गया है कि हम कब अपने दार्शनिको को पहचानेगे तथा उनको प्रतिष्ठा देगे? कब हम विदेशी मान्यता और प्रतिष्ठा की लालसा का परित्याग करेगे?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. श्वीट्जर अलबर्ट : इडिया थाट एण्ड इटस डेवलपमेट
2. अंडरवुड, ए.सी : कंटेम्पोररी इडियन थाट
3. राधाक्ष्णन्, आदि : कंटेम्पोरेरी इडियन फिलासफी
4. पाण्डेय, संगमलाल : भारतीय दर्शन
5. शिल्व, आर्थरपाल : फिलासफी ऑफ राधाकृष्णन्
6. नीलो, बिल्फ्रेड : इम्पैक्ट ऑफ इडियन थाट आन जर्मन पोएट्स एण्ड फिलाफर्स
7. राधाकृष्णन् स. : महात्मा गांधी
8. मूर्ति, के.स. :समकालीन भारतीय दर्शन
9. नवरवणे, वी.एस. :आधुनिक भारतीय चिंतन

*Corresponding Author: डॉ. भूपेन्द्र कौर